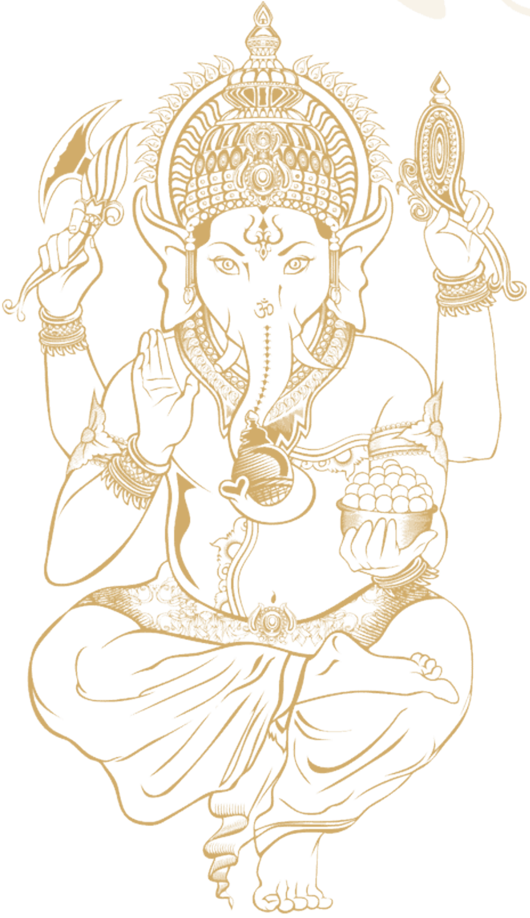

Souravsingh

APRAJITA RATHOR

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121113201

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121113201 Date: 30/01/2026

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
09/04/1993	जन्म तिथि	18/06/1994
शुक्रवार	दिन	शनिवार
घंटे 11:30:00	जन्म समय	11:45:00 घंटे
घटी 14:18:52	जन्म समय(घटी)	16:22:01 घटी
India	देश	India
Allahabad	स्थान	Sonbarsa
25:27:00 उत्तर	अक्षांश	26:51:00 उत्तर
81:50:00 पूर्व	रेखांश	85:34:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:02:40	स्थानिक संस्कार	00:12:16 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:46:27	सूर्योदय	04:54:06
18:22:34	सूर्यास्त	18:43:26
23:46:03	चित्रपक्षीय अयनांश	23:47:00
मिथुन	लग्न	कन्या
बुध	लग्न लग्नाधिपति	बुध
तुला	राशि	कन्या
शुक्र	राशि-स्वामी	बुध
विशाखा	नक्षत्र	हस्त
गुरु	नक्षत्र स्वामी	चन्द्र
3	चरण	4
सिद्धि	योग	वरियान
विष्टि	करण	तैतिल
ते-तेजवन्त	जन्म नामाक्षर	ठ-ठुमकी
मेष	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मिथुन
शूद्र	वर्ण	वैश्य
मानव	वश्य	मानव
व्याघ्र	योनि	महिष
राक्षस	गण	देव
अन्त्य	नाड़ी	आद्य
सर्प	वर्ग	श्वान

9835195382

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
गुरु 4वर्ष 5मा 1दि		25:08:36	मिथु	लग्न	कन्या	02:16:00	चन्द्र 1वर्ष 1मा 27दि	
बुध		25:37:52	मीन	सूर्य	मिथु	03:00:52	गुरु	
10/09/2016		29:38:56	तुला	चंद्र	कन्या	21:47:24	14/08/2020	
10/09/2033		27:52:35	मिथु	मंगल	मेष	24:56:38	14/08/2036	
बुध	06/02/2019	28:11:22	कुंभ	बुध व	मिथु	13:32:34	गुरु	02/10/2022
केतु	04/02/2020	14:47:13	कन्या व	गुरु व	तुला	11:16:21	शनि	14/04/2025
शुक्र	04/12/2022	13:30:46	मीन व	शुक्र	कर्क	09:40:46	बुध	21/07/2027
सूर्य	11/10/2023	03:36:13	कुंभ	शनि	कुंभ	18:36:00	केतु	26/06/2028
चन्द्र	11/03/2025	19:43:11	वृश्चि व	राहु	तुला	29:36:24	शुक्र	25/02/2031
मंगल	08/03/2026	19:43:11	वृष व	केतु	मेष	29:36:24	सूर्य	14/12/2031
राहु	25/09/2028	28:17:59	धनु	हर्षे व	मक	01:40:30	चन्द्र	14/04/2033
गुरु	01/01/2031	27:20:00	धनु	नेप व	धनु	28:51:45	मंगल	21/03/2034
शनि	10/09/2033	01:17:07	वृश्चि व	प्लूटो व	वृश्चि	02:05:31	राहु	14/08/2036

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

23:46:03 चित्रपक्षीय अयनांश 23:47:00

लग्न-चलित

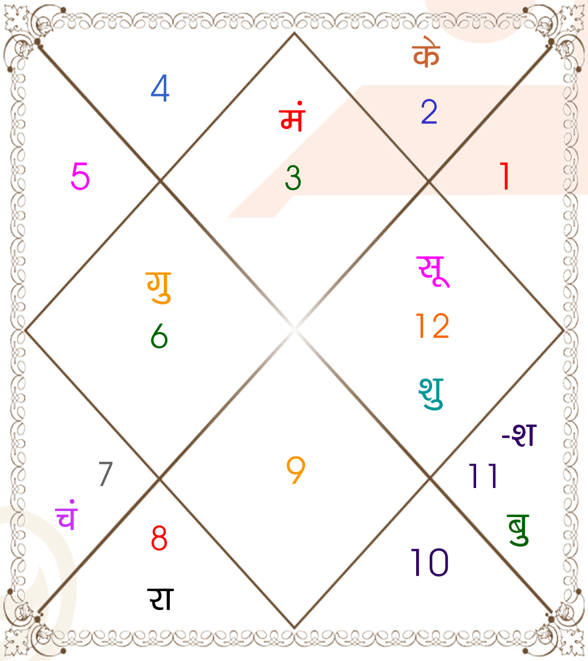

लग्न-चलित

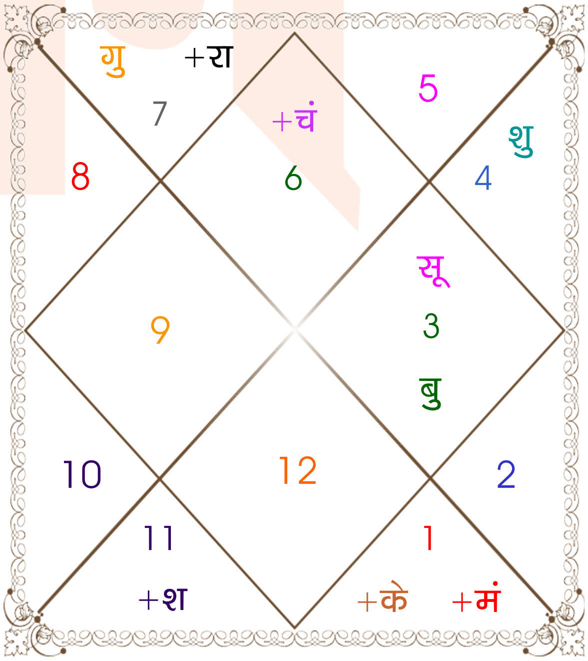

ज्योतिष ग्रह रत्न् केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र
लाइन तलाव रांची झारखंड
9835195382
9835195382

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	शूद्र	वैश्य	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	मानव	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	क्षेम	वध	3	1.50	--	भाग्य
योनि	व्याघ्र	महिष	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	शुक्र	बुध	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	देव	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	तुला	कन्या	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	आद्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	18.50		

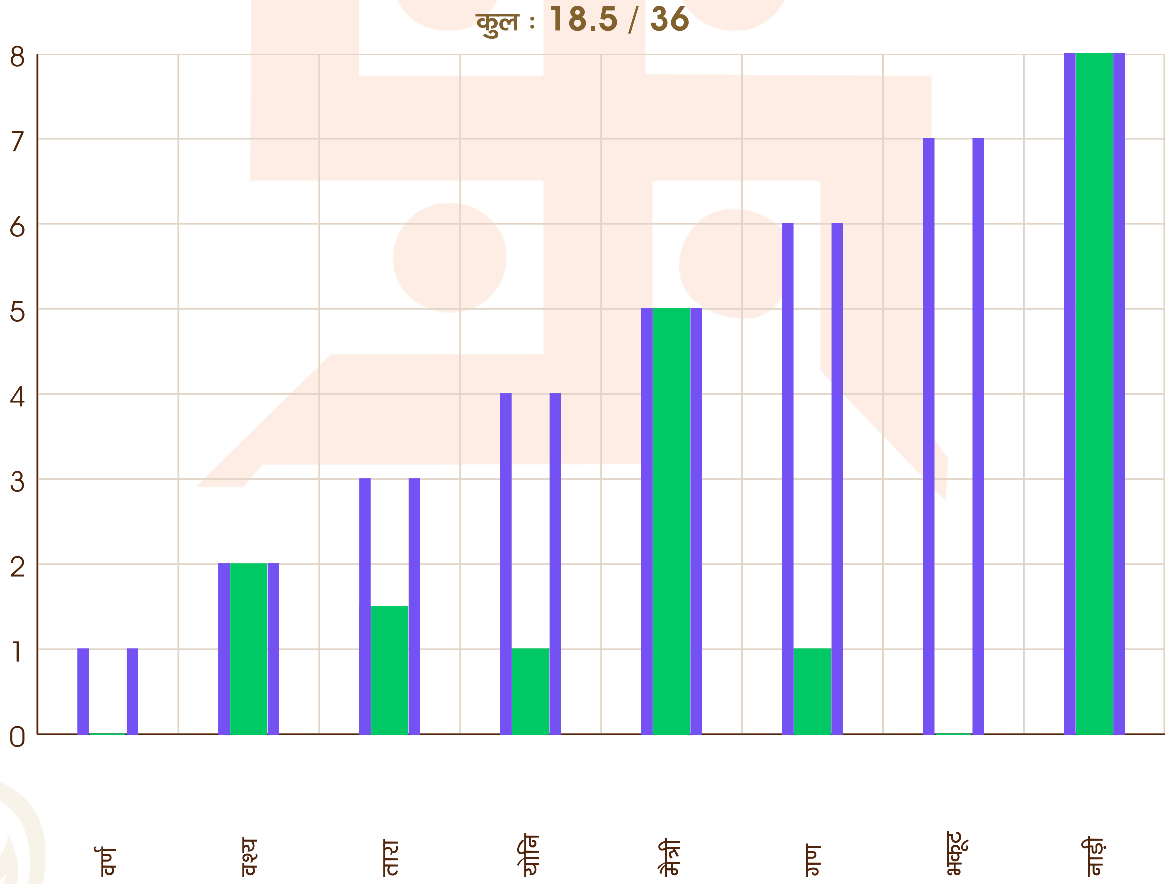

अष्टकूट मिलान

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

ैवनतंअेपदही का वर्ग सर्प है तथा ।च्ट।श्रप्ज्।ट।ज्भ्ट का वर्ग श्वान है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार ैवनतंअेपदही और ।च्ट।श्रप्ज्।ट।ज्भ्ट का मिलान शुभ है।

मंगलीक दोष मिलान

ैवनतंअेपदही मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

।च्ट।श्रप्ज्।ट।ज्भ्ट मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

ढप्ष्;थ्डम्गंवूदक्मइ;0द्धत्र1द्धझ क्योंकि मंगल ।च्ट।श्रप्ज्।ट।ज्भ्ट कि कुण्डली में उच्च का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि ।च्ट।श्रप्ज्।ट।ज्भ्ट कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु ैवनतंअेपदही कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

ैवनतंअेपदही तथा ।च्ट।श्रप्ज्।ट।ज्भ्ट में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

9835195382

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

ैवनतंअेपदही का वर्ण शूद्र है तथा ।च्ट।श्रप्ज। ट।ज्भ्ट का वर्ण वैश्य है। क्योंकि ।च्ट।श्रप्ज। ट।ज्भ्ट का वर्ण ैवनतंअेपदही के वर्ण से ऊँचा है जिसके कारण यह अच्छा मिलान नहीं है। ।च्ट।श्रप्ज। ट।ज्भ्ट अति स्वार्थी तथा धन-लोलुप होगी। वह हमेशा दूसरों की कीमत पर सिर्फ अपने स्वार्थ की पूर्ति करती रहेगी। यह ।च्ट।श्रप्ज। ट।ज्भ्ट अपने पति, बच्चों तथा परिवार के लोगों की न तो चिन्ता करेगी और न ही देखभाल। लड़ाई-झगड़ा करके यह हमेशा घर के लोगों का जीना दूभर कर सकती है।

वश्य

ैवनतंअेपदही का वश्य द्विपद अर्थात मनुष्य है एवं ।च्ट।श्रप्ज। ट।ज्भ्ट का वश्य भी द्विपद अर्थात मनुष्य है अर्थात दोनों का वश्य समान है। अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान होगा। ैवनतंअेपदही एवं ।च्ट।श्रप्ज। ट।ज्भ्ट दोनों के स्वभाव, गुण, व्यवहार पसंद/नापसंद तथा बुद्धि एवं ज्ञान एक समान होंगे। यह मिलान अति अनुकूल है तथा दोनों एक-दूजे के लिए ही बने हैं। दोनों के बीच प्रेम, सद्भावना एवं आपसी समझ एवं सामंजस्य की भावना बनी रहेगी। दोनों एक-दूसरे का सम्मान करेंगे तथा मिलजुलकर पारिवारिक दायित्वों का बोझ एक-दूसरे की सहायता एवं सहयोग करके साथ उठाते रहेंगे।

तारा

ैवनतंअेपदही की तारा क्षेम तथा ।च्ट।श्रप्ज। ट।ज्भ्ट की तारा वध है। ।च्ट।श्रप्ज। ट।ज्भ्ट की तारा वध होने के कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। ऐसे में यह विवाह ैवनतंअेपदही एवं ।च्ट।श्रप्ज। ट।ज्भ्ट दोनों के लिए दुर्भाग्य के द्वार खोल सकता है। ।च्ट।श्रप्ज। ट।ज्भ्ट अपने पति एवं उसके परिवार के लिए दुर्भाग्यशाली साबित हो सकती है। अतः संभव है कि घर में निरंतर दुःखदायी घटनाओं का क्रम चलता रहे। जिससे घर में दुःख एवं पीड़ा के वातावरण का निर्माण हो सकता है। ऐसी स्थिति में बच्चे भी काफी कष्ट भुगत सकते हैं तथा सफलता प्राप्ति के लिए उन्हें कड़ी मेहनत करनी पड़ सकती है।

योनि

ैवनतंअेपदही की योनि व्याघ्र है तथा ।च्ट।श्रप्ज। ट।ज्भ्ट की योनि महिष है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं है। इन दोनों योनि के बीच सामान्य वैर है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान न होकर बुरा मिलान ही रहेगा। जिसके कारण दोनों की रुचि एवं पसंद नापसंद अलग-अलग ही होंगी। इनके वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में अक्सर लड़ाई झगड़े हो सकते हैं। कभी- कभी लड़ाई झगड़ा घरेलू हिंसा का रूप भी ले सकता है। लड़ाई झगड़े के कारण पारिवारिक माहौल तनावपूर्ण एवं कलेशपूर्वक ही रहेगा। दोनों कभी कभी एक दूसरे पर हिंसक आक्रमण भी कर सकते हैं। दोनों के बीच झगड़े का कारण बुद्धिमत्ता एवं परस्पर समझदारी की कमी ही हो सकती है। यदि समझदारी और समझबूझ से काम न लिया गया तो कुछ समय

अंतराल पर यह स्थिति मुकदमेबाजी तक भी पहुंच सकती है। इस प्रकार परस्पर प्रेम एवं सौहार्द्र की भावना का अभाव ही रहेगा। साथ ही दोनों के बीच अविश्वास की भावना भी रह सकती है। कभी-कभी धनहानि होने की भी संभावना होगी। अतः यदि दोनों परस्पर समझदारी एवं बुद्धि से काम लें तो स्थिति को सुधारा भी जा सकता है। परस्पर लड़ाई झगड़े और वैचारिक मतभेद रहने के कारण परिवार में सुख समृद्धि का अभाव ही देखने को मिलेगा। इस प्रकार वैवाहिक जीवन संघर्षपूर्ण व कलेशपूर्वक बीतने की संभावना है अतः सतर्कता बरतें।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में ैवनतंअेपदही एवं ।च्ट।श्रप्ज। ट।ज्भ्व्ट दोनों के राशि स्वामी परस्पर मित्र हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्यातिष की दृष्टि से यदि ैवनतंअेपदही एवं ।च्ट।श्रप्ज। ट।ज्भ्व्ट के राशिस्वामी परस्पर मित्र होने के कारण इसे अति उत्तम मिलान माना जाता है। जिसके कारण ैवनतंअेपदही एवं ।च्ट।श्रप्ज। ट।ज्भ्व्ट जीवन की हर खुशी एवं सुख प्राप्त करने में सफल होंगे तथा इनमें परस्पर विश्वास, प्रेम, समझ एवं सहयोग की भावना बनी रहेगी। साथ ही हर प्रकार की सुख-सुविधाओं एवं वैभव से परिपूर्ण होंगे।

गण

ैवनतंअेपदही का गण राक्षस तथा ।च्ट।श्रप्ज। ट।ज्भ्व्ट का गण देव है। अर्थात ।च्ट।श्रप्ज। ट।ज्भ्व्ट का गण ैवनतंअेपदही के गण से श्रेष्ठ है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। जिसके कारण ैवनतंअेपदही निर्दयी, कठोर, निष्ठुर एवं झगड़ालू हो सकते हैं। साथ ही ैवनतंअेपदही का ।च्ट।श्रप्ज। ट।ज्भ्व्ट के साथ क्रूर व्यवहार करने की संभावना बनी रह सकती है। पति-पत्नी, अक्सर कुत्ते-बिल्लियों की भांति झगड़ा कर सकते हैं एवं परिवार में अक्सर अशांति का माहौल बना रहेगा। ।च्ट।श्रप्ज। ट।ज्भ्व्ट हमेशा हर कदम पर समझौता करने की कोशिश करती रहेगी ताकि दोनों का संबंध बना रहे।

भकूट

ैवनतंअेपदही से ।च्ट।श्रप्ज। ट।ज्भ्व्ट की राशि द्वादश भाव में स्थित है ।च्ट।श्रप्ज। ट।ज्भ्व्ट से ैवनतंअेपदही की राशि द्वितीय भाव में स्थित है जिसके कारण यह मिलान अच्छा नहीं है। जिसके फलस्वरूप दोनों के बीच कलह, लड़ाई-झगड़े, मुकदमेबाजी, तलाक एवं परिवार में कुछ अनहोनी घटनाएं आदि हो सकती हैं। इस मिलान में ैवनतंअेपदही परिश्रमी, परिवार से प्रेम करने वाला, अच्छा कमाने वाला तथा बचत करने वाला होगा किंतु ।च्ट।श्रप्ज। ट।ज्भ्व्ट का स्वभाव इसके ठीक विपरीत होगा। ।च्ट।श्रप्ज। ट।ज्भ्व्ट की शारीरिक स्थिति कमजोर तथा स्वास्थ्य अक्सर खराब रह सकता है। साथ ही ।च्ट।श्रप्ज। ट।ज्भ्व्ट तुरंत क्रोधित होने वाली तथा अपव्ययी होंगी। वह अपने पति द्वारा कमाए गए पैसों को अपने फालतू शौकों एवं दिखावे में व्यय करने वाली होंगी। परिणामतः दोनों के बीच अक्सर लड़ाई-झगड़े होते रहेंगे।

नाड़ी

ैवनतंअेपदही की नाड़ी अन्त्य है तथा ।च्ट।श्रप्ज्। ट।ज्भ्ट की नाड़ी आद्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। यह समन्वय शरीर के दो महत्वपूर्ण अवयवों वात एवं कफ को संतुलित करता है। ैवनतंअेपदही की अन्त्य नाड़ी तथा ।च्ट।श्रप्ज्। ट।ज्भ्ट की आद्य नाड़ी होने के कारण उत्तम स्वास्थ्य, सम्पत्ति, सत्ता, शक्ति एवं दम्पत्ति के पारस्परिक प्रेम एवं सहयोग समय-समय पर मिलता रहेगा। आपकी संतान अति भाग्यशाली, आज्ञाकारी एवं शक्ति संपन्न होंगी।

9835195382

मेलापक फलित

स्वभाव

ैवनतंअेपदही की जन्म राशि वायुतत्व युक्त तुला तथा ाच्ाश्रप्ज। ृाज्भ्ट की राशि पृथ्वी तत्व युक्त कन्या राशि है। पृथ्वी एवं वायु तत्व में नैसर्गिक विषमता होने के कारण इनके मध्य स्वभावगत असमानताएं रहेंगी फलतः यदा कदा आपसी संबधों में तनाव का भाव उत्पन्न होगा। अतः यह मिलान सामान्य रहेगा।

ैवनतंअेपदही की राशि का स्वामी शुक्र तथा ाच्ाश्रप्ज। ृाज्भ्ट की राशि का स्वामी बुध परस्पर मित्र राशियों में पड़ते हैं। इसके प्रभाव से उपरोक्त अशुभ फलों में न्यूनता होगी तथा एक सच्चे मित्र की तरह जीवन को सुख पूर्वक व्यतीत करेंगे। ैवनतंअेपदही और ाच्ाश्रप्ज। ृाज्भ्ट एक दूसरे के गुणों से प्रभावित रहेंगे तथा कमियों की उपेक्षा करेंगे। वे परस्पर सेवा सदभाव, सहयोग एवं समर्पण की भावना रखेंगे तथा सुख दुख में एक दूसरे को पूर्ण सहायता प्रदान करने में तत्पर होंगे जिससे इनका वैवाहिक जीवन सुखी रहेगा।

ैवनतंअेपदही तथा ाच्ाश्रप्ज। ृाज्भ्ट की राशियां परस्पर द्वादश एवं द्वितीय भाव में पड़ती है शास्त्रानुसार यह प्रबल भकूट दोष माना जाता है। इसके प्रभाव से उपरोक्त शुभ प्रभावों में न्यूनता आएगी तथा परस्पर संबंधों में मतभेद तथा विरोध का भाव उत्पन्न होगा। इनके मानसिक स्तर पर भी मतभेद होंगे जिससे संबंधों में कटुता एवं तनाव उत्पन्न होगा। अतः यदि ैवनतंअेपदही और ाच्ाश्रप्ज। ृाज्भ्ट बुद्धिमता से कार्य लें तथा परस्पर आलोचना तथा वैमनस्य के भाव का त्याग करें तो इनका वैवाहिक जीवन सुखमय हो सकता है।

ैवनतंअेपदही और ाच्ाश्रप्ज। ृाज्भ्ट दोनौं का वश्य मानव है। इसके प्रभाव से इनकी अभिरूचियों में समानता रहेगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक स्तर पर आवश्यकताएं समान होंगी। अतः दाम्पत्य संबंधों में एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में समर्थ रहेंगे।

ैवनतंअेपदही का वर्ण शूद्र तथा ाच्ाश्रप्ज। ृाज्भ्ट का वर्ण वैश्य है। अतः ैवनतंअेपदही की प्रवृति किसी भी कार्य को परिश्रम तथा ईमानदारी से पूर्ण करने की रहेगी तथा ाच्ाश्रप्ज। ृाज्भ्ट धनार्जन संबधी कार्यो में सकिय रहेंगी तथा धन को विशेष वरीयता प्रदान करके वणिक बुद्धि से कार्यों को सम्पन्न करेंगी ।

धन

ैवनतंअेपदही और ाच्ाश्रप्ज। ृाज्भ्ट दोनों की तारा परस्पर सम है। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्य रूप से धन एवं लाभ अर्जित करने में दोनों समर्थ होंगे। ैवनतंअेपदही और ाच्ाश्रप्ज। ृाज्भ्ट दोनों की राशियां परस्पर द्वितीय एवं द्वादश भाव में पड़ती है। अतः यह भकूट दोष माना जाएगा जिससे धनार्जन में परिश्रम की बहुलता रहेगी लेकिन मंगल के शुभ प्रभाव से उचित धन प्राप्त करके आर्थिक स्थिति में सुदृढ़ता बनी रहेगी।

ज्योतिष ग्रह रत्न केंद्र आचार्य शशि कांत मिश्र
लाइन तलाव रांची झारखंड
9835195382
9835195382

भकूट दोष के प्रभाव से ैवनतंअेपदही की प्रवृति व्ययशील होगी। वह जुआ सट्टा लाटरी आदि पर भी वे अधिक व्यय करेंगे जिससे यदा कदा अर्थिक विषमता की अनुभूति हो सकती है लेकिन इसका प्रभाव अधिक समय तक नहीं रहेगा। सामान्यतया स्थिति अनुकूल ही रहेगी तथापि ैवनतंअेपदही को ऐसी प्रवृतियों की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

स्वास्थ्य

ैवनतंअेपदही अन्त्य तथा ाच्ट ाश्रप्ज। ट ाज्भ्ट आद्य नाड़ी में उत्पन्न हुए हैं। अतः विभिन्न नाड़ियों में उत्पन्न होने के कारण नाड़ी दोष से ये मुक्त रहेंगे जिससे गंभीर शारीरिक समस्या उत्पन्न नहीं होगी परन्तु मंगल का ैवनतंअेपदही और ाच्ट ाश्रप्ज। ट ाज्भ्ट दोनों के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव रहेगा। इसके प्रभाव से ाच्ट ाश्रप्ज। ट ाज्भ्ट गुप्त या धातु संबंधी रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगी। साथ ही ैवनतंअेपदही को हृदय रोग संबंधी परेशानियां होगी एवं संभोग शक्ति में शिथिलता की अनुभूति करेंगे जिससे दाम्पत्य सुख में न्यूनता की अनुभूति होगी। अतः इन दुष्प्रभावों में कमी करने के लिए ैवनतंअेपदही और ाच्ट ाश्रप्ज। ट ाज्भ्ट दोनों को नियमित रूप से हनुमानजी की उपासना तथा मंगलवार के उपवास करने चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति की दृष्टि से ैवनतंअेपदही और ाच्ट ाश्रप्ज। ट ाज्भ्ट का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उन्हें उचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा इसमें अनावश्यक विलम्ब भी नहीं होगा। साथ ही बच्चों के जन्म में भी सामान्य अंतर रहेगा जिससे उनका पालन पोषण उचित ढंग से करने में आसानी रहेगी। इसके अतिरिक्त ैवनतंअेपदही और ाच्ट ाश्रप्ज। ट ाज्भ्ट के पुत्र एवं कन्या संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव के विषय में ाच्ट ाश्रप्ज। ट ाज्भ्ट के मन में पहले से ही अनावश्यक भय की अनुभूति रहेगी लेकिन ाच्ट ाश्रप्ज। ट ाज्भ्ट को इस विषय में किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा सामान्य रूप से गर्भावस्था का समय व्यतीत करना चाहिए। प्रसव काल में ाच्ट ाश्रप्ज। ट ाज्भ्ट को प्रसूति या अन्य किसी भी प्रकार की चिकित्सा की आवश्यकता नहीं पड़ेगी तथा सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी। साथ ही स्वयं भी स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगी।

संतति पक्ष से ैवनतंअेपदही और ाच्ट ाश्रप्ज। ट ाज्भ्ट सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे तथा बच्चे अपने क्षेत्र में अपनी बुद्धिमता तथा योग्यता से उन्नतिमार्ग पर अग्रसर होंगे। साथ ही व्यवहार कुशलता का गुण भी उनमें विद्यमान रहेगा। माता पिता के प्रति उनका पूर्ण आदर तथा आज्ञापालन का भाव रहेगा तथा उनकी इच्छा के विरुद्ध वे कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार ैवनतंअेपदही और ाच्ट ाश्रप्ज। ट ाज्भ्ट का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

ाच्ट ाश्रप्ज। ट ाज्भ्ट के अपने ससुराल पक्ष के लोगों से अच्छे संबध रहेंगे साथ ही

9835195382

अन्य जनों की अपेक्षा सास से संबधों में अधिक मधुरता रहेगी। विवाह के बाद ।च्ट।श्रप्ज। ट।ज्भ्व्ट अत्यंत ही धैर्य एवं परस्पर सामजंस्यता के भाव का पालन करेंगी। उनका यह धैर्य एवं सामंजस्यता का भाव भविष्य में उनके लिए अनुकूल सिद्ध होगा।

साथ ही ससुर के साथ भी सामंजस्य स्थापित करने में उन्हें कोई परेशानी नहीं होगी। अपनी मधुर वाणी एवं विनम्र व्यवहार से उनके हृदय को जीतने में समर्थ रहेंगी। इसी प्रकार अपनी मुक्त मित्रता की प्रवृति के कारण देवर एवं ननदों से भी संबध अनुकूल रहेंगे तथा उनकी ओर से ।च्ट।श्रप्ज। ट।ज्भ्व्ट पूर्ण सहयोग अर्जित करने में समर्थ रहेंगी।

यद्यपि ।च्ट।श्रप्ज। ट।ज्भ्व्ट अपनी ओर से समस्त ससुराल पक्ष के लोगों को सन्तुष्ट एवं प्रसन्न करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी परन्तु इन लोगों से इन्हें कोई विशिष्ट सहयोग नहीं मिलेगा तथा संबधो में औपचारिकता अधिक रहेगी।

ससुराल-श्री

ैवनतंअेपदही तथा सास के संबधों में विशेष मधुरता का भाव नहीं रहेगा तथा आयु में काफी अंतर होने के कारण दोनों के मध्य वैचारिक मतभेद रहेंगे लेकिन इनमें अधिक गंभीरता नहीं रहेगी। यदि ैवनतंअेपदही तथा इनकी सास आपसी सामंजस्य तथा बुद्धिमता से व्यवहार करें तो संबधों की मधुरता में वृद्धि हो सकती है।

लेकिन ससुर के साथ में ैवनतंअेपदही के संबध मधुर रहेंगे तथा उनके प्रति मान सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा। साथ ही उनसे पिता के समान ही व्यवहार करेंगे। साथ ही वे भी ैवनतंअेपदही को पुत्रवत स्नेह तथा वात्सल्य प्रदान करेंगे। ैवनतंअेपदही समय समय पर अपने ससुर से आवश्यक तथा बहुमूल्य सलाह तथा निर्देश भी प्राप्त करते रहेंगे परन्तु साले तथा सालियों के साथ में संबधों में तनाव तथा मतभेद रहेंगे तथा एक दूसरे के प्रति आलोचना तथा प्रतिद्वन्दिता का भाव रहेगा जिससे आपस में स्नेह सहयोग तथा सहानुभूति के भाव में न्यूनता रहेगी।

इस प्रकार सामान्य रूप से ससुरालवालों का दृष्टिकोण ैवनतंअेपदही के प्रति अनुकूल ही रहेगा।